CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2022 with Solution PDF-Set 2/6/2 - Compartment

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक:** 40

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 7 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 2, 3, 4, 7 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1(क). निम्नलिखित दिए गए तीन शीर्षकों में से किसी एक शीर्षक पर लगभग 150 – 200 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

जब मेरी/मेरा प्रिय अध्यापिका/अध्यापक सेवानिवृत्त (रिटायर्ड) हुईं/हुआ [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में निजी अनुभव, कल्पना और संवेदना का स्वाभाविक मेल होता है। इस विषय में प्रिय अध्यापक की सेवानिवृत्ति के अवसर पर उनके व्यक्तित्व, योगदान और विदाई के भावों को केंद्र में रखना चाहिए।
- लेख का आरंभ किसी दृश्य से, मध्य अध्यापक से जुड़े अनुभवों से और अंत उनकी सीख के स्थायी प्रभाव से किया जा सकता है। प्रथम पुरुष में लिखने से अनुभव की आत्मीयता बनी रहती है।

चरण 1: प्रारूप और दृष्टिकोण तय करना विषय के अनुकूल संक्षिप्त शीर्षक दें और लेख को अनुच्छेदों में लिखें। यह व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित रचनात्मक लेख है; इसलिए इसमें पत्र की तरह पता, संबोधन या समापन नहीं आएगा। भाषा सरल, भावपूर्ण तथा घटनाओं के अनुकूल रखें। लगभग 150–200 शब्दों में एक ही अनुभव को क्रमबद्ध रूप से विकसित करें।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना पहले विदाई समारोह और उस दिन की असामान्य अनुभूति का चित्र खींचें। फिर अध्यापक की विशेषताओं को केवल प्रशंसात्मक शब्दों में गिनाने के स्थान पर किसी छोटे अनुभव से स्पष्ट करें। अंत में उपहार, विदाई संदेश और छात्र के संकल्प द्वारा लेख को पूर्ण करें। भावुकता स्वाभाविक हो तथा सेवानिवृत्ति को केवल दुख का प्रसंग न बनाकर उनकी सीख की निरंतरता से जोड़ें।

चरण 3: पूर्ण रचनात्मक लेख **विदाई के बाद भी साथ**

उस सुबह विद्यालय का प्रांगण रोज जैसा होकर भी कुछ अलग था। मंच पर फूल सजे थे, लेकिन हमारे चेहरों पर उत्साह से अधिक उदासी थी। आज हमारे प्रिय हिंदी अध्यापक शर्मा जी सेवानिवृत्त हो रहे थे।

शर्मा जी ने हमें केवल कविताओं का अर्थ नहीं समझाया, जीवन को समझने की दृष्टि भी दी। मुझे याद है, पहली बार मंच पर बोलते समय मैं अटक गया था। उन्होंने मुसकराकर कहा था कि गलती से डरने के बजाय फिर प्रयास करना चाहिए। उसी प्रोत्साहन ने मेरे भीतर आत्मविश्वास जगाया। कमजोर विद्यार्थियों को वे छुट्टी के बाद भी समय देते थे।

विदाई समारोह में जब उन्होंने बोलना शुरू किया, पूरा सभागार शांत हो गया। उन्होंने हमें ईमानदार रहने और प्रश्न पूछते रहने की सीख दी। हमने उन्हें अपने अनुभवों से भरी एक स्मृति-पुस्तिका भेंट की। उसे पढ़ते हुए उनकी आँखें नम हो गईं और हमारी भी।

छुट्टी की घंटी बजी तो लगा, एक परिचित अध्याय समाप्त हो रहा है। फिर समझ आया कि अच्छे शिक्षक विद्यालय से विदा होते हैं, हमारे व्यक्तित्व से नहीं। उनकी सीख को व्यवहार में उतारना ही हमारी सच्ची विदाई-भेंट होगी।

चरण 4: निष्कर्ष प्रस्तुत लेख में विदाई का दृश्य, अध्यापक के योगदान का व्यक्तिगत उदाहरण और उनकी सीख को जीवन में अपनाने का संकल्प एक सूत्र में जुड़े हैं। मॉडल लेख का मुख्य पाठ निर्धारित 150–200 शब्दों की सीमा में है।

त्वरित सुझाव: किसी शिक्षक के व्यक्तित्व को प्रभावी बनाने के लिए एक छोटी, ठोस स्मृति जोड़ें और अंतिम अनुच्छेद को उसी शिक्षक से मिली सीख से जोड़कर समाप्त करें।

1(ख). निम्नलिखित दिए गए तीन शीर्षकों में से किसी एक शीर्षक पर लगभग 150 – 200 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

सिनेमा का समाज पर प्रभाव [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़े विचारों को मौलिक, प्रभावी और क्रमबद्ध भाषा में प्रस्तुत किया जाता है। यहाँ सिनेमा के सामाजिक प्रभाव पर संतुलित दृष्टि अपेक्षित है।
- लेख में आकर्षक आरंभ, उदाहरणों के साथ विचारों का विस्तार और सार्थक समापन होना चाहिए। लगभग 150–200 शब्दों की सीमा में विषय के सकारात्मक तथा नकारात्मक, दोनों पक्ष रखे जा सकते हैं।

चरण 1: प्रारूप और विषय का केंद्र तय करना शीर्षक 'सिनेमा का समाज पर प्रभाव' रखें। आरंभ में सिनेमा की लोकप्रियता और उसके

दृश्य-श्रव्य प्रभाव का उल्लेख करें। इसके बाद बताएँ कि मनोरंजन के साथ वह हमारी सोच, व्यवहार और आकांक्षाओं को भी प्रभावित करता है। यह रचनात्मक लेख है, इसलिए इसमें पत्र की तरह पता या संबोधन देने की आवश्यकता नहीं है।

चरण 2: विचारों को क्रम देना पहले सिनेमा से मिलने वाली सामाजिक जागरूकता, प्रेरणा और सांस्कृतिक परिचय की चर्चा करें। फिर हिंसा, दिखावे और रूढ़ छवियों के प्रभाव को स्पष्ट करें। अंत में जिम्मेदार फिल्म निर्माण और विवेकशील दर्शक की भूमिका बताकर लेख को सकारात्मक दिशा दें। नीचे दिया गया मॉडल लेख निर्धारित शब्द-सीमा के भीतर है।

चरण 3: संपूर्ण मॉडल लेख **सिनेमा का समाज पर प्रभाव**

अँधेरे सिनेमाघर में चमकता पर्दा केवल कहानियाँ नहीं दिखाता, वह हमारे सपनों और सोच को भी आकार देता है। सिनेमा मनोरंजन का लोकप्रिय साधन है, पर उसका प्रभाव टिकट की कीमत से कहीं आगे तक जाता है।

अच्छी फिल्में समाज की समस्याओं को हमारे सामने जीवंत कर देती हैं। शिक्षा, स्त्री-समानता, जातिगत भेदभाव और पर्यावरण जैसे विषयों पर बनी फिल्में दर्शकों को संवेदनशील बनाती हैं। किसी संघर्षशील पात्र की सफलता युवाओं में आत्मविश्वास जगाती है। विभिन्न प्रदेशों की भाषा, वेशभूषा और संस्कृति से परिचय कराकर सिनेमा लोगों को करीब भी लाता है।

लेकिन पर्दे की हर चमक उजाला नहीं होती। हिंसा का महिमामंडन, स्त्रियों का अपमानजनक चित्रण और अनावश्यक उपभोग का प्रदर्शन गलत धारणाएँ पैदा कर सकते हैं। नायक की नकल में खतरनाक करतब करना या फिल्मी जीवन को ही सफलता का पैमाना मानना हानिकारक है।

इसलिए फिल्मकारों को अपनी सामाजिक जिम्मेदारी समझनी चाहिए और दर्शकों को विवेक के साथ फिल्में देखनी चाहिए। परिवार तथा विद्यालय बच्चों को वास्तविकता और कल्पना का अंतर समझाएँ। सिनेमा समाज का दर्पण भी है और दिशा दिखाने वाला दीपक भी; जरूरत उसके प्रकाश का सही उपयोग करने की है।

चरण 4: निष्कर्ष इस लेख में सिनेमा के मनोरंजन, जागरूकता और प्रेरणा देने वाले प्रभावों के साथ उसके संभावित दुष्प्रभावों का संतुलित विवेचन किया गया है। समापन दर्शक तथा फिल्मकार, दोनों की जिम्मेदारी स्पष्ट करता है।

त्वरित सुझाव: इस विषय में केवल फिल्मों की प्रशंसा न करें; एक अनुच्छेद में लाभ, दूसरे में दुष्प्रभाव और अंत में विवेकपूर्ण समाधान लिखें।

1(ग). निम्नलिखित दिए गए तीन शीर्षकों में से किसी एक शीर्षक पर लगभग 150 – 200 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

अमीर बनने की चाहत [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़ा अनुभव, कल्पना और चिंतन स्वाभाविक क्रम में प्रस्तुत किए जाते हैं। प्रभावी आरंभ, विचारों की संगति तथा सार्थक अंत लेख को रोचक बनाते हैं।
- 'अमीर बनने की चाहत' पर लिखते समय आर्थिक समृद्धि की उपयोगिता के साथ ईमानदार परिश्रम, संतोष और मानवीय संबंधों का महत्त्व उभारना उपयुक्त है।

चरण 1: प्रारूप और विषय की दिशा तय करना सबसे ऊपर दिया गया शीर्षक लिखें। आरंभ में किसी छोटी घटना से धनवान बनने की इच्छा सामने लाएँ। फिर उसकी उपयोगिता और अंधी दौड़ के परिणाम दिखाएँ। अंत में यह स्पष्ट करें कि समृद्धि का सार केवल धन जमा करना नहीं, बल्कि सम्मानपूर्ण और संतुलित जीवन जीना भी है।

चरण 2: सामग्री का क्रम बनाना एक बच्चे की दृष्टि से कहानी आगे बढ़ सकती है। पहले वह किसी संपन्न व्यक्ति की सुविधाएँ देखकर प्रभावित हो; फिर अपनी माँ के श्रम और पिता के व्यवहार से जीवन की दूसरी सच्चाई समझे। अनुभव से निकला निष्कर्ष उपदेश की अपेक्षा अधिक स्वाभाविक लगेगा। नीचे दिया गया आदर्श लेख निर्धारित शब्दसीमा के भीतर है।

चरण 3: पूरा रचनात्मक लेख **अमीर बनने की चाहत**

बचपन में जब भी मोहल्ले की सबसे बड़ी कोठी के सामने से गुजरता, मेरी चाल धीमी हो जाती। चमचमाती कार और ऊँचे फाटक को

देखकर मन कहता, एक दिन मैं भी बहुत अमीर बनूँगा। तब लगता था कि धन आ जाए तो हर दुख अपने आप समाप्त हो जाएगा।

एक शाम उसी कोठी के मालिक हमारे घर आए। माँ ने साधारण चाय बनाई और पिताजी देर तक उनसे बातें करते रहे। जाते समय उन्होंने कहा, 'तुम्हारे घर बैठकर मन हल्का हो जाता है।' मैं चौंक गया। जिसके पास इतना धन था, उसे हमारे छोटे घर में सुकून मिल रहा था!

उस दिन मेरी चाहत समाप्त नहीं हुई, उसका अर्थ बदल गया। धन आवश्यक है; उससे शिक्षा, उपचार और सुरक्षित जीवन की व्यवस्था होती है। लेकिन बेईमानी से कमाया धन यदि नींद और रिश्ते छीन ले, तो वह कैसी समृद्धि?

अब मैं भी अमीर बनना चाहता हूँ, पर अपने श्रम और योग्यता से। चाहता हूँ कि मेरी कमाई परिवार की जरूरतें पूरी करे और किसी जरूरतमंद के काम भी आए। मेरी तिजोरी के साथ मेरा मन भी समृद्ध हो। आखिर असली अमीरी वही है, जिसमें सुविधाओं के साथ संतोष और बाँटने की खुशी भी हो।

चरण 4: निष्कर्ष प्रस्तुत लेख में व्यक्तिगत अनुभव के माध्यम से धन की उपयोगिता और उसकी सीमाओं को जोड़ा गया है। इसका निष्कर्ष ईमानदार कमाई, संतोष और दूसरों की सहायता को समृद्धि का आधार बनाता है।

त्वरित सुझाव: इस विषय पर केवल धन के लाभ या दोष न गिनाएँ; एक छोटी घटना से चाहत में आया बदलाव दिखाएँ और अंत को उसी अनुभव से जोड़ें।

2(क). कोरोना काल में आम आदमियों द्वारा रोगियों के लिए किए गए सहायता-कार्यों की प्रशंसा करते हुए किसी हिन्दी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक के नाम पत्र एक औपचारिक पत्र है। इसमें प्रेषक का पता, दिनांक, संपादक का पद और समाचार-पत्र का नाम, विषय, संबोधन, मूल कथ्य तथा समापन क्रम से आते हैं।
- प्रश्न का केंद्र कोरोना काल में साधारण नागरिकों के सहायता-कार्यों की प्रशंसा है। इसलिए पत्र में रोगियों तक भोजन, दवा, ऑक्सीजन और आवश्यक सूचना पहुँचाने जैसे ठोस कार्यों तथा उनकी मानवीय महत्ता का उल्लेख होना चाहिए।

चरण 1: पत्र का प्रारूप निर्धारित कीजिए ऊपर प्रेषक का पता और दिनांक लिखें। इसके बाद संपादक का पता, संक्षिप्त विषय और सम्मानसूचक संबोधन दें। मूल कथ्य में समाचार-पत्र के माध्यम से नागरिकों के सेवा-भाव की सराहना करें। अंत में इन प्रयासों को स्थान देने का अनुरोध करके नाम लिखें। भाषा विनम्र और तथ्यपरक रखें।

चरण 2: विषय के अनुकूल सामग्री चुनिए संकट की संक्षिप्त पृष्ठभूमि से शुरुआत करें। फिर सामान्य लोगों द्वारा रोगियों और उनके परिवारों को दिए गए सहयोग के उदाहरण दें। सहायता का महत्व बताने के लिए यह स्पष्ट करें कि उससे असहाय परिवारों को राहत और मनोबल मिला। किसी अप्रमाणित संस्था, व्यक्ति या आँकड़े का उल्लेख आवश्यक नहीं है। पत्र का उद्देश्य सेवा की प्रशंसा और ऐसे सहयोग को प्रोत्साहन देना है।

चरण 3: पूरा आदर्श पत्र 24, विकास नगर
नई दिल्ली
15 जुलाई, 2022
सेवा में,
संपादक महोदय,
दैनिक जागरण,
नई दिल्ली
विषय : कोरोना काल में आम नागरिकों के सहायता-कार्यों की सराहना।
महोदय,
आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से मैं उन साधारण नागरिकों के सेवा-भाव की प्रशंसा करना चाहता हूँ, जिन्होंने कोरोना काल

में रोगियों की सहायता की। संकट की उस घड़ी में अनेक लोगों ने अपने सीमित साधनों से जरूरतमंदों तक भोजन, दवाइयाँ और अन्य आवश्यक वस्तुएँ पहुँचाईं।

किसी ने अस्पताल पहुँचने के लिए वाहन की व्यवस्था की, तो किसी ने ऑक्सीजन तथा उपलब्ध बिस्तरों की सही जानकारी जुटाई। कई युवाओं ने अकेले रह रहे बुजुर्गों की देखभाल की। रोगियों के परिजनों को भोजन पहुँचाने और उनका मनोबल बढ़ाने के प्रयास भी सराहनीय रहे। इन कार्यों से अनेक असहाय परिवारों को राहत मिली और समाज में सहयोग का विश्वास मजबूत हुआ।

आपसे निवेदन है कि ऐसे प्रेरक प्रयासों को अपने समाचार-पत्र में स्थान दें, ताकि इन सेवाभावी नागरिकों का उत्साह बढ़े और अन्य लोग भी जरूरतमंदों की सहायता के लिए आगे आएँ।

धन्यवाद।

भवदीय,
अमित कुमार

चरण 4: निष्कर्ष इस पत्र में औपचारिक प्रारूप के साथ नागरिकों के ठोस सहायता-कार्यों की प्रशंसा की गई है और संपादक से उन्हें समाचार-पत्र में स्थान देने का अनुरोध किया गया है।

त्वरित सुझाव: विषय-पंक्ति में प्रशंसा का उद्देश्य स्पष्ट रखें और मूल कथ्य में सहायता के ठोस उदाहरण देकर संपादक से प्रकाशन का विनम्र अनुरोध करें।

अथवा

2(ख). आप खुशी/खुशवंत हैं। आपका ए.टी.एम. कार्ड कहीं खो गया है। आपने फोन द्वारा अपना कार्ड ब्लॉक करवा दिया है। आपको दूसरा ए.टी.एम. कार्ड चाहिए। अपनी समस्या तथा आवश्यकता का उल्लेख करते हुए बैंक प्रबंधक को आवेदन-पत्र लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बैंक प्रबंधक को लिखा गया आवेदन औपचारिक पत्र होता है। इसमें प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता का पद और पता, विषय, संबोधन, समस्या का स्पष्ट विवरण, निवेदन और हस्ताक्षर क्रम से आते हैं।
- इस आवेदन का उद्देश्य खोए हुए ए.टी.एम. कार्ड के स्थान पर नया कार्ड प्राप्त करना है। फोन द्वारा पुराने कार्ड को पहले ही ब्लॉक करवा दिए जाने का उल्लेख आवश्यक है, जिससे बैंक को वर्तमान स्थिति स्पष्ट हो।

चरण 1: पत्र का प्रारूप और विषय निर्धारित करना प्रेषक के रूप में प्रश्न में दिया गया नाम खुशी चुनेंगे। पहले उसका पता और दिनांक लिखेंगे। इसके बाद शाखा प्रबंधक का पदनाम तथा बैंक का पता देंगे। विषय में खोए हुए ए.टी.एम. कार्ड के स्थान पर नया कार्ड जारी करने का अनुरोध स्पष्ट करेंगे। संबोधन और समापन में औपचारिक शिष्टाचार बनाए रखेंगे।

चरण 2: आवश्यक सूचनाओं की योजना बनाना मुख्य भाग में खाते की पहचान, कार्ड खोने की घटना और फोन द्वारा उसे ब्लॉक करवाने की सूचना देंगे। फिर दैनिक बैंकिंग कार्यों में हो रही कठिनाई बताते हुए नया कार्ड जारी करने का निवेदन करेंगे। आवश्यक प्रपत्र भरने तथा पहचान संबंधी दस्तावेज उपलब्ध कराने की तत्परता भी व्यक्त करेंगे। पत्र में पिन अथवा किसी गोपनीय जानकारी को लिखने की आवश्यकता नहीं है।

चरण 3: पूर्ण आवेदन-पत्र 24, शांति नगर
नई दिल्ली
10 जून, 2022
सेवा में,
शाखा प्रबंधक
भारतीय स्टेट बैंक
शांति नगर शाखा, नई दिल्ली

विषय: खोए हुए ए.टी.एम. कार्ड के स्थान पर नया कार्ड जारी करने हेतु आवेदन।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं आपकी शाखा की बचत खाताधारक खुशी हूँ। मेरी खाता संख्या 12345678901 है। कल बाजार जाते समय मेरा ए.टी.एम. कार्ड कहीं खो गया। बहुत खोजने पर भी वह नहीं मिला। कार्ड के दुरुपयोग की आशंका को देखते हुए मैंने तत्काल बैंक की दूरभाष सेवा के माध्यम से उसे ब्लॉक करवा दिया है।

कार्ड न होने के कारण नकद निकासी तथा अन्य आवश्यक बैंकिंग कार्यों में कठिनाई हो रही है। अतः आपसे अनुरोध है कि पुराने कार्ड के स्थान पर नया ए.टी.एम. कार्ड जारी करने की कृपा करें। मैं इसके लिए निर्धारित आवेदन-पत्र भरने, आवश्यक पहचान-पत्र देने तथा नियमानुसार शुल्क जमा करने के लिए तैयार हूँ। कृपया आगे की प्रक्रिया से भी अवगत कराएँ।

धन्यवाद।

भवदीया

खुशी

खाता संख्या: 12345678901

चरण 4: निष्कर्ष इस आवेदन में कार्ड खोने की समस्या, फोन द्वारा उसे ब्लॉक करवाने की सूचना तथा नया कार्ड प्राप्त करने की आवश्यकता स्पष्ट रूप से व्यक्त की गई है। पत्र का प्रारूप और भाषा औपचारिक हैं।

त्वरित सुझाव: विषय में नया कार्ड जारी करने का अनुरोध लिखें और मुख्य भाग में पुराने कार्ड को फोन द्वारा ब्लॉक करवाने की सूचना अवश्य दें।

3(i)(क). नाटक में 'स्वगत कथन' से आप क्या समझते हैं ? आजकल इसे नाटक में कैसे प्रयोग किया जाता है और उसे क्या कहते हैं ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नाटक में पात्रों के संवाद उनके व्यवहार, मनोभाव और कथा के विकास का माध्यम होते हैं। स्वगत कथन पात्र के अंतर्मन को प्रकट करने की नाटकीय युक्ति है।
- स्वगत कथन की विशेषता यह है कि दर्शक पात्र की बात सुनते हैं, किंतु मंच पर उपस्थित दूसरे पात्र उसे सुना हुआ नहीं मानते।

चरण 1: स्वगत कथन का अर्थ जब कोई नाटकीय पात्र अपने आप से बात करता है और अपने मन में उठ रहे विचारों, भावनाओं, आशंकाओं अथवा द्वंद्व को बोलकर व्यक्त करता है, तो उसे 'स्वगत कथन' कहते हैं। यह किसी दूसरे पात्र को संबोधित सामान्य संवाद नहीं होता। इसके द्वारा दर्शक उस पात्र के भीतर चल रही ऐसी बात जान लेते हैं जो उसके बाहरी व्यवहार से पूरी तरह स्पष्ट नहीं होती।

चरण 2: आधुनिक नाटकों में प्रयोग और नाम आजकल स्वगत कथन का प्रयोग प्रायः इस प्रकार किया जाता है कि पात्र सीधे दर्शकों को संबोधित करके अपनी बात कहता है। दर्शक उसके विश्वासपात्र जैसे बन जाते हैं और उसके मनोभावों से परिचित होते हैं। इस रूप को 'एकालाप' कहा जाता है। इसमें एक ही पात्र बोलता है; दूसरे पात्रों के साथ प्रश्नोत्तर आवश्यक नहीं होता। अतः उत्तर में केवल अपने आप से बात करने का अर्थ बताना पर्याप्त नहीं है; दर्शकों को सीधे संबोधन तथा एकालाप नाम का उल्लेख भी आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष पात्र का अपने आप से बोलकर अपने मन के विचार प्रकट करना स्वगत कथन है। आधुनिक नाटक में वह सीधे दर्शकों से अपनी बात कहता है; इसे एकालाप कहा जाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर को तीन सूत्रों में रखें—अपने आप से कथन, दर्शकों को सीधे संबोधन और एकालाप नाम।

अथवा

3(i)(ख). कहानी से आप क्या समझते हैं ? यह भी लिखिए कि कहानी का संबंध किन लोगों से जुड़ता है और नाटक का संबंध किनसे होता है। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी गद्य की कथात्मक विधा है जिसमें जीवन की किसी घटना, अनुभव या स्थिति को पात्रों और घटनाक्रम के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है।
- कहानी का पाठकीय अनुभव मुख्यत: लेखक और पाठक से जुड़ता है, जबकि नाटक एक सामूहिक रंगमंचीय प्रस्तुति है।

चरण 1: कहानी का अर्थ स्पष्ट करना कहानी साहित्य की वह गद्य विधा है जिसमें जीवन की किसी घटना, अनुभव, संवेदना अथवा परिस्थिति का रोचक और प्रभावपूर्ण वर्णन होता है। इसमें पात्र, कथानक, परिवेश और संवाद के माध्यम से कोई केंद्रीय प्रभाव उभरता है। कहानीकार वर्णन करके पात्रों के मनोभाव तथा घटनाओं की पृष्ठभूमि भी बता सकता है। इस प्रकार पाठक लिखित शब्दों के आधार पर पूरे घटनाक्रम की कल्पना करता है।

चरण 2: कहानी और नाटक से जुड़े लोगों का अंतर कहानी का सीधा संबंध कहानीकार और पाठक से होता है। लेखक कथा लिखता है और पाठक उसे पढ़कर उसका आस्वादन करता है। इसके विपरीत नाटक का संबंध नाटककार के अतिरिक्त निर्देशक, अभिनेताओं, मंच-सज्जाकारों, प्रकाश तथा ध्वनि की व्यवस्था करने वालों और दर्शकों से होता है। नाटककार का लिखा पाठ निर्देशक और रंगकर्मियों के सामूहिक प्रयास से मंच पर साकार होता है। अभिनेता पात्रों के संवाद और क्रिया प्रस्तुत करते हैं तथा दर्शक उसे देखकर और सुनकर ग्रहण करते हैं। इसलिए कहानी का पढ़ा जाना और नाटक का मंचित होना उनके संबंधों के इस अंतर का आधार है।

चरण 3: निष्कर्ष कहानी जीवन की घटना या अनुभूति का कथात्मक गद्य रूप है। उसका संबंध मुख्यत: कहानीकार और पाठक से होता है; नाटक नाटककार, निर्देशक, अभिनेताओं, अन्य रंगकर्मियों तथा दर्शकों से जुड़ता है।

त्वरित सुझाव: पहले कहानी की परिभाषा लिखें, फिर लेखक–पाठक और नाटककार–रंगकर्मी–दर्शक के संबंध का अंतर स्पष्ट करें।

3(ii)(क). रेडियो नाटक की अवधि सीमित क्यों रखी जाती है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो श्रव्य माध्यम है; इसमें कथानक, पात्र और परिवेश का बोध संवाद, ध्वनि-प्रभाव तथा संगीत से होता है।
- नाटक की अवधि का संबंध श्रोता की एकाग्रता और सुनकर कथा को ग्रहण करने की क्षमता से है।

चरण 1: श्रव्य माध्यम की सीमा रेडियो नाटक में दृश्य दिखाई नहीं देते। श्रोता को पात्रों की पहचान, घटनाओं का क्रम और वातावरण केवल सुनकर समझना तथा अपनी कल्पना में रचना पड़ता है। इसलिए उसे लगातार ध्यान केंद्रित रखना होता है। बहुत लंबा प्रसारण होने पर यह एकाग्रता बनाए रखना कठिन हो सकता है और कथा के महत्त्वपूर्ण सूत्र छूट सकते हैं।

चरण 2: अवधि सीमित रखने का उद्देश्य लंबी अवधि से श्रोता को ऊब या थकान हो सकती है और उसकी रुचि कम हो सकती है। अत: रेडियो नाटक की अवधि सीमित रखी जाती है, जिससे उसकी एकाग्रता बनी रहे, कथा सुगठित ढंग से आगे बढ़े और नाटक का प्रभाव बना रहे। लेखक अनावश्यक विस्तार के स्थान पर चुस्त संवादों तथा आवश्यक घटनाओं को प्राथमिकता देता है।

चरण 3: निष्कर्ष रेडियो नाटक की अवधि श्रोता का ध्यान, रुचि और एकाग्रता बनाए रखने के लिए सीमित रखी जाती है, क्योंकि उसे पूरी कथा केवल सुनकर समझनी होती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में केवल समय की कमी न लिखें; श्रव्य माध्यम और श्रोता की एकाग्रता का सीधा संबंध स्पष्ट करें।

अथवा

3(ii)(ख). रेडियो नाटक और सिनेमा में क्या अंतर है और क्यों ? स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- माध्यम की प्रकृति रचना की प्रस्तुति के साधनों को निर्धारित करती है।
- रेडियो श्रव्य माध्यम है, जबकि सिनेमा दृश्य-श्रव्य माध्यम है।

चरण 1: प्रस्तुति के साधनों का अंतर रेडियो नाटक में पात्र, घटनाएँ और वातावरण संवाद, आवाज़ के उतार-चढ़ाव, संगीत तथा ध्वनि-प्रभावों से व्यक्त होते हैं। दृश्य दिखाई नहीं देते, इसलिए श्रोता सुनी हुई बातों से दृश्य की कल्पना करता है। उदाहरण के लिए, वर्षा का वातावरण बरसने की ध्वनि से बनाया जा सकता है। पात्रों की पहचान भी मुख्यतः उनकी आवाज़ और संवाद से होती है।

चरण 2: अंतर का कारण सिनेमा में दर्शक दृश्य देखने के साथ ध्वनियाँ भी सुनता है। अतः अभिनय, चेहरे के भाव, वेशभूषा, स्थान, प्रकाश और कैमरे के माध्यम से भी कथा प्रस्तुत की जा सकती है। रेडियो नाटक में जो बात आवाज़ या ध्वनि-संकेत से समझानी पड़ती है, वही सिनेमा में दृश्य से स्पष्ट हो सकती है। यह अंतर इसलिए है कि रेडियो केवल सुनने का, जबकि सिनेमा देखने और सुनने दोनों का माध्यम है।

चरण 3: निष्कर्ष रेडियो नाटक केवल श्रव्य साधनों पर आधारित है; सिनेमा दृश्य और श्रव्य दोनों साधनों का उपयोग करता है। इसी माध्यमगत भिन्नता से दोनों की प्रस्तुति अलग होती है।

त्वरित सुझाव: तुलना करते समय पहले माध्यम बताइए, फिर उसी से संवाद, ध्वनि और दृश्य के प्रयोग का अंतर निकालिए।

4(i)(क). 'पत्रकारीय लेखन' किसे कहते हैं ? पूर्णकालिक पत्रकार और अंशकालिक पत्रकार में क्या अंतर है ? स्पष्ट कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारीय लेखन जनसंचार माध्यमों के लिए तथ्यपरक सूचना, समाचार, विचार और विश्लेषण प्रस्तुत करने का लेखन है।
- पूर्णकालिक और अंशकालिक पत्रकार का मूल अंतर समाचार-संस्था से उनके रोजगार तथा कार्य-समय के संबंध में है।

चरण 1: पत्रकारीय लेखन का अर्थ समाचार-पत्र, पत्रिका और अन्य जनसंचार माध्यमों के लिए समाचार, रिपोर्ट, संपादकीय, लेख, साक्षात्कार आदि लिखने को पत्रकारीय लेखन कहते हैं। इसका उद्देश्य जनसाधारण तक महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ, घटनाओं की जानकारी और आवश्यक विश्लेषण पहुँचाना है। इसकी भाषा स्पष्ट, सरल और विषयानुकूल होती है तथा इसमें तथ्यों की शुद्धता, प्रामाणिकता और उत्तरदायित्व का विशेष महत्त्व होता है।

चरण 2: पूर्णकालिक पत्रकार पूर्णकालिक पत्रकार किसी समाचार-संस्था का नियमित कर्मचारी होता है। वह उस संस्था के लिए नियमित रूप से निर्धारित दायित्व निभाता है और सामान्यतः नियमित वेतन तथा संस्था के नियमों के अनुसार सुविधाएँ प्राप्त करता है। समाचार जुटाना, रिपोर्ट तैयार करना अथवा संपादन जैसे कार्य उसकी नियुक्ति और जिम्मेदारी के अनुसार होते हैं। उसका मुख्य व्यावसायिक समय उसी संस्था के पत्रकारिता-संबंधी काम में लगता है।

चरण 3: अंशकालिक पत्रकार और मुख्य अंतर अंशकालिक पत्रकार किसी संस्था के लिए सीमित समय या आवश्यकता के अनुसार समाचार-सामग्री उपलब्ध कराता है। उसे प्रायः प्रकाशित सामग्री या किए गए काम के आधार पर मानदेय दिया जाता है। वह पूर्णकालिक नियमित कर्मचारी की तरह दिनभर उस संस्था से बँधा नहीं होता और अन्य काम भी कर सकता है। इस प्रकार दोनों में मुख्य अंतर नियमित नियुक्ति, कार्य-समय और भुगतान की व्यवस्था का है; तथ्य-जाँच तथा विश्वसनीयता का दायित्व दोनों का समान रूप से रहता है।

चरण 4: निष्कर्ष जनसंचार माध्यमों के लिए समाचार और संबंधित सामग्री लिखना पत्रकारीय लेखन है। पूर्णकालिक पत्रकार नियमित कर्मचारी के रूप में काम करता है, जबकि अंशकालिक पत्रकार सीमित समय या आवश्यकतानुसार योगदान देता है।

त्वरित सुझाव: दोनों प्रकारों का अंतर नियुक्ति, समय और भुगतान के आधार पर लिखें; अंशकालिक पत्रकार को अनिवार्यतः स्वतंत्र पत्रकार न मानें।

अथवा

4(i)(ख). 'डेस्क' और 'बीट' किसे कहते हैं ? इनका संबंध किनसे है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार-संगठन में काम का विभाजन कार्यालय के संपादन कार्य और क्षेत्र में समाचार-संकलन के आधार पर होता है।
- डेस्क का संबंध संपादकीय व्यवस्था से और बीट का संबंध संवाददाता के निर्धारित समाचार-क्षेत्र से है।

चरण 1: डेस्क का अर्थ और संबंध डेस्क समाचार-पत्र के कार्यालय की वह संपादकीय इकाई है जहाँ विभिन्न स्रोतों और संवाददाताओं से आई खबरों का चयन, जाँच, संपादन तथा प्रस्तुतीकरण किया जाता है। यहाँ भाषा की अशुद्धियाँ दूर की जाती हैं, आवश्यक तथ्य जाँचे जाते हैं और खबर का उपयुक्त शीर्षक बनाया जाता है। अत: डेस्क का सीधा संबंध संपादन विभाग तथा संपादकों और उपसंपादकों के काम से है। किसी विभाग का डेस्क उस विषय की खबरों की प्रस्तुति सँभाल सकता है।

चरण 2: बीट का अर्थ और संबंध बीट वह निश्चित क्षेत्र या विषय है जिसकी खबरें जुटाने का दायित्व किसी संवाददाता को दिया जाता है। उदाहरण के लिए अपराध, शिक्षा, राजनीति और खेल अलग-अलग बीट हो सकते हैं। संबंधित संवाददाता अपने क्षेत्र के घटनाक्रम पर नियमित नज़र रखता है, स्रोत विकसित करता है तथा तथ्यों की पुष्टि करके समाचार भेजता है। अत: बीट का संबंध संवाददाता और समाचार-संकलन या रिपोर्टिंग से है।

चरण 3: दोनों की कार्यगत कड़ी बीट पर काम करने वाला संवाददाता घटनास्थल या संबंधित संस्थाओं से सामग्री जुटाकर कार्यालय भेजता है। डेस्क उस सामग्री को पाठकों के लिए स्पष्ट, विश्वसनीय और प्रकाशन योग्य रूप देता है। इस प्रकार दोनों समाचार-निर्माण की परस्पर जुड़ी जिम्मेदारियाँ हैं।

चरण 4: निष्कर्ष डेस्क संपादन और समाचार-प्रस्तुति की कार्यालयी इकाई है, जबकि बीट संवाददाता को समाचार-संकलन के लिए सौंपा गया निश्चित विषय या क्षेत्र है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में डेस्क के साथ संपादन और बीट के साथ संवाददाता का निर्धारित क्षेत्र लिखें; इससे दोनों का अंतर स्पष्ट होगा।

4(ii)(क). एक सफल साक्षात्कार लेने के लिए पत्रकार में ज्ञान के अतिरिक्त अन्य किन गुणों की आवश्यकता होती है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- साक्षात्कार प्रश्नोत्तर के माध्यम से व्यक्ति के विचार, अनुभव और उपयोगी सूचना सामने लाने की प्रक्रिया है।
- विषय-ज्ञान के साथ संवेदनशीलता, सक्रिय श्रवण और संप्रेषण-कौशल संवाद को सार्थक बनाते हैं।

चरण 1: संवाद और व्यवहार के गुण पत्रकार में विनम्रता, आत्मीयता, धैर्य, संवेदनशीलता और दूसरों को ध्यान से सुनने की क्षमता होनी चाहिए। इनसे साक्षात्कार देने वाला व्यक्ति सहज और विश्वासपूर्ण वातावरण में खुलकर बोल पाता है। पत्रकार को अपनी बात थोपने या उत्तर के बीच अनावश्यक हस्तक्षेप करने से बचना चाहिए। स्पष्ट और शिष्ट भाषा प्रश्न को समझने में सहायता करती है।

चरण 2: सूझबूझ और प्रश्न करने की क्षमता पत्रकार में जिज्ञासा, आत्मविश्वास, निष्पक्षता और तुरंत उपयुक्त पूरक प्रश्न पूछने की सूझबूझ भी आवश्यक है। ध्यान से सुनने पर वह उत्तर में छूटे महत्त्वपूर्ण पक्ष पकड़ सकता है और अस्पष्ट बात को स्पष्ट करा सकता है। संयम उसे असहमति या कठिन उत्तर मिलने पर भी बातचीत को मूल विषय पर केंद्रित रखने में सहायता देता है।

चरण 3: निष्कर्ष ज्ञान के अतिरिक्त विनम्रता, संवेदनशीलता, धैर्य, ध्यान से सुनना और तत्पर सूझबूझ आवश्यक हैं, क्योंकि इन्हीं से भरोसा बनता है और प्रासंगिक, स्पष्ट उत्तर मिलते हैं।

त्वरित सुझाव: केवल गुणों की सूची न दें; प्रत्येक प्रमुख गुण को सहज संवाद या उपयोगी उत्तर मिलने के कारण से जोड़ें।

अथवा

4(ii)(ख). समाचार-पत्रों में सामान्य समाचारों से अलग हटकर विशेष क्षेत्रों या विषयों के बारे में क्यों लिखा जाता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विशेषीकृत लेखन किसी क्षेत्र या विषय की जानकारी को उसकी पृष्ठभूमि और संदर्भ के साथ प्रस्तुत करता है।
- पाठकों की विविध रुचियों तथा जटिल विषयों को समझने की जरूरत से विशेष लेखन की आवश्यकता उत्पन्न होती है।

चरण 1: विविध पाठकीय जरूरतें समाचार-पत्र के पाठकों की रुचियाँ, व्यवसाय और आवश्यकताएँ अलग-अलग होती हैं। किसी को विज्ञान और तकनीक की जानकारी चाहिए, किसी को कृषि, अर्थव्यवस्था, शिक्षा, खेल या स्वास्थ्य की। केवल सामान्य दैनिक घटनाओं की खबरें इन अलग-अलग जरूरतों को पूरा नहीं कर सकतीं। इसलिए इन क्षेत्रों पर केंद्रित सामग्री प्रकाशित की जाती है, जिससे पाठक अपने उपयोग और रुचि के विषय की जानकारी पा सकें।

चरण 2: गहराई और उपयोगी समझ विशेष क्षेत्रों की घटनाएँ समझने के लिए केवल घटना का संक्षिप्त विवरण पर्याप्त नहीं होता। उनकी पृष्ठभूमि, कारण, प्रभाव और प्रासंगिक तथ्यों का सरल विश्लेषण भी आवश्यक है। विषय की समझ रखने वाला लेखक जटिल जानकारी को विश्वसनीय और बोधगम्य बनाता है। इससे पाठक घटनाओं का महत्त्व समझ पाते हैं, अपना ज्ञान बढ़ाते हैं तथा संबंधित विषय पर अधिक विवेकपूर्ण राय बना सकते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष विशेष लेखन पाठकों की विविध रुचियों और जरूरतों को पूरा करता है तथा विशिष्ट विषयों की गहरी, स्पष्ट और उपयोगी समझ प्रदान करता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर के दो आधार रखें: पाठकों की अलग-अलग जरूरतें और सामान्य खबर से आगे विषय की गहराई में जाने की आवश्यकता।

5(क). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

"फिराक गोरखपुरी की रुबाइयों में बच्चे के प्रति माँ की ममता का अद्भुत वर्णन है।" कैसे ? उदाहरण सहित लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फिराक की रुबाइयों में माँ और बच्चे के घरेलू प्रसंगों के माध्यम से वात्सल्य का स्वाभाविक चित्र उभरता है।
- उत्तर में माँ के स्नेह को केवल सामान्य कथन से नहीं, बच्चे को खिलाने, नहलाने और उसकी इच्छा पूरी करने के प्रसंगों से स्पष्ट करना चाहिए।

चरण 1: माँ की गोद और बच्चे की हँसी फिराक गोरखपुरी माँ के वात्सल्य को रोज़मर्रा के आत्मीय दृश्यों में व्यक्त करते हैं। आँगन में माँ अपने चाँद जैसे बच्चे को गोद में लिए खड़ी है। वह उसे अपने हाथों में झुलाती और उछालती है। बच्चे की खिलखिलाहट से वातावरण आनंदित हो उठता है। माँ के लिए उसका शिशु ही सुख और सौंदर्य का केंद्र है। यह दृश्य माँ-बच्चे के सहज, निष्कपट और आनंदपूर्ण संबंध को साकार करता है।

चरण 2: देखभाल और बालमन की समझ दूसरे प्रसंग में माँ बच्चे को साफ पानी से नहलाती है, उसके उलझे बालों में कंघी करती है और अपने घुटनों में लेकर कपड़े पहनाती है। इसमें स्नेह के साथ उसकी सावधानी और सेवा-भाव भी दिखाई देते हैं। एक अन्य प्रसंग में बच्चा चाँद को खिलौने के रूप में माँगता है। माँ दर्पण में चाँद का प्रतिबिंब दिखाकर उसे बहलाती है। वह उसकी कल्पना को ठेस पहुँचाए बिना उसकी इच्छा पूरी करती है। इन छोटे-छोटे कार्यों में मातृप्रेम की गहराई और बच्चे के मन की सूक्ष्म समझ प्रकट होती है।

चरण 3: निष्कर्ष इस प्रकार बच्चे को गोद में खिलाने, नहलाकर सँवारने और दर्पण में चाँद दिखाकर बहलाने के प्रसंगों द्वारा फिराक ने माँ की ममता का सजीव तथा हृदयस्पर्शी चित्र प्रस्तुत किया है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में वात्सल्य का नाम भर न लिखें; गोद में खिलाने, नहलाने और चाँद दिखाने के प्रसंगों को ममता से जोड़कर स्पष्ट करें।

5(ख). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

तुलसीदास ने पेट की आग को 'समुद्र की आग से बड़ी क्यों' कहा है ? कवितावली पाठ के आधार पर लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलसीदास ने भूख को ऐसी प्रबल विवशता बताया है जो मनुष्य के श्रम, व्यवहार और नैतिक निर्णयों को प्रभावित करती है।
- समुद्र की आग अर्थात बड़वाग्नि के साथ तुलना पेट की आग की व्यापकता और विनाशकारी शक्ति स्पष्ट करने के लिए की गई है।

चरण 1: आजीविका के संघर्ष का चित्र कवितावली में तुलसीदास बताते हैं कि किसान, व्यापारी, भिखारी, सेवक, कलाकार तथा अन्य सभी लोग पेट भरने के लिए प्रयत्न करते हैं। कोई पढ़ता है, कोई कौशल सीखता है, कोई पहाड़ों और घने जंगलों में भटकता है। आजीविका के साधन न मिलने पर मनुष्य की दशा अत्यंत दयनीय हो जाती है। इसलिए भूख केवल शारीरिक कष्ट नहीं, समूचे जीवन को संचालित करने वाली कठिन विवशता है।

चरण 2: बड़वाग्नि से बड़ी होने का आशय समुद्र में जलने वाली बड़वाग्नि अत्यंत भयंकर मानी जाती है, किंतु पेट की आग उससे भी अधिक विकराल है। भूखा व्यक्ति पेट भरने के लिए ऊँचे-नीचे काम तथा धर्म-अधर्म का विचार छोड़कर अनुचित कर्म तक करने लगता है। तुलसीदास इसकी चरम स्थिति बताते हैं कि लोग पेट के लिए अपने बेटे-बेटी तक बेच देते हैं। इस प्रकार भूख मनुष्य के विवेक, पारिवारिक स्नेह और सामाजिक मर्यादाओं को भी संकट में डाल देती है। इसी व्यापक और कठोर प्रभाव के कारण कवि ने पेट की आग को समुद्र की आग से बड़ी कहा है।

चरण 3: निष्कर्ष पेट की आग मनुष्य को किसी भी प्रकार आजीविका जुटाने तथा कभी-कभी अनैतिक कर्म करने तक विवश कर देती है; इसीलिए तुलसीदास ने उसकी तीव्रता और विनाशकारी प्रभाव को बड़वाग्नि से भी अधिक बताया है।

त्वरित सुझाव: बड़वाग्नि की तुलना का आशय समझाते समय भूख, आजीविका की विवशता और बेटे-बेटी बेचने के चरम उदाहरण को परस्पर जोड़ें।

5(ग). निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

'उषा' कविता में कवि ने 'सूर्योदय' को किसका जादू टूटना बताया है और यह जादू किन चीज़ों का है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शमशेर बहादुर सिंह की कविता 'उषा' में भोर के बदलते आकाश को घरेलू जीवन तथा रंगों से जुड़े बिंबों द्वारा चित्रित किया गया है।
- यहाँ जादू उषाकालीन प्रकृति के क्षण-क्षण बदलते, सम्मोहक सौंदर्य का है; सूर्योदय उस रहस्यमय दृश्य का अंत करता है।

चरण 1: जादू का आशय समझना कवि ने सूर्योदय को उषा के सौंदर्य का जादू टूटना बताया है। सूर्य निकलने से पहले आकाश में नीले, धूसर, लाल तथा उजले रंगों का अद्भुत मेल दिखाई देता है। बदलते प्रकाश के कारण परिचित आकाश भी किसी जादुई दृश्य जैसा लगता है। कवि इसी मोहक और रहस्यपूर्ण वातावरण में डूबा हुआ है।

चरण 2: जादू रचने वाले बिंब पहचानना प्रातःकाल का आकाश पहले नीले शंख जैसा दिखाई देता है। फिर वह राख से लीपे हुए गीले चौके जैसा लगता है। कहीं बहुत काली सिल पर थोड़ा लाल केसर धुल जाने का बिंब उभरता है, तो कहीं स्लेट पर लाल खड़िया चाक मल दिए जाने का। अंत में नीले जल में किसी की गोरी देह झिलमिलाने जैसा उजला सौंदर्य दिखाई पड़ता है। ये रंग, प्रकाश और आकृतियों के परिवर्तन ही उषा का जादू रचते हैं।

चरण 3: सूर्योदय से होने वाला परिवर्तन स्पष्ट करना सूर्य निकलने पर प्रकाश स्पष्ट और तेज हो जाता है। भोर की धुँधली, कोमल तथा रंग बदलती छवियाँ समाप्त होने लगती हैं और दिन का सामान्य दृश्य सामने आता है। इसी कारण कवि कहता है कि अब जादू टूट रहा है, क्योंकि सूर्योदय हो रहा है। यहाँ किसी वास्तविक तंत्र-मंत्र का संकेत नहीं है।

चरण 4: निष्कर्ष सूर्योदय उषा के सम्मोहक प्राकृतिक सौंदर्य का जादू टूटना है। यह जादू भोर के आकाश में बदलते रंगों, कोमल प्रकाश और उनसे बनती नीले शंख, गीले चौके, केसर लगी सिल, स्लेट तथा झिलमिलाती गोरी देह जैसी छवियों का है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले उषा के सौंदर्य का उल्लेख करें, फिर कविता के रंग-बिंब दें और अंत में सूर्य निकलने से उनके लुप्त होने का संबंध जोड़ें।

6(क). निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

ढोलक की आवाज़ किस प्रकार से मृत-गाँव में संजीवनी शक्ति भरती रहती थी ? 'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर लिखिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी 'पहलवान की ढोलक' में ढोलक का स्वर विपत्ति से जूझने के साहस और जीवन के प्रति विश्वास का प्रतीक है।
- महामारी से त्रस्त गाँव में यह स्वर रोग का उपचार नहीं करता, बल्कि भय और निराशा से टूटते लोगों को मानसिक संबल देता है।

चरण 1: गाँव की भयावह स्थिति बताना गाँव में मलेरिया और हैजे का प्रकोप था। लोग लगातार मर रहे थे और बचे हुए ग्रामीण रोग, अभाव तथा मृत्यु की आशंका से सहमे हुए थे। रात के अँधेरे और सन्नाटे में यह भय और भी बढ़ जाता था। कराहते रोगियों तथा अपने लोगों को खो चुके परिवारों के लिए गाँव मानो मृत हो गया था। ऐसी परिस्थिति में जीवन का कोई परिचित और उत्साहपूर्ण स्वर बहुत बड़ा सहारा बन सकता था।

चरण 2: ढोलक के स्वर का प्रभाव समझाना लुट्टन पहलवान की ढोलक रात के सन्नाटे को चीरकर गूँजती थी। उसके नियमित और जोशीले ताल से लोगों को लगता था कि अभी जीवन शेष है और विपत्ति के सामने डटे रहने की शक्ति भी बाकी है। जिस तरह ढोलक ने अखाड़े में पहलवान को संघर्ष की प्रेरणा दी थी, उसी तरह उसका स्वर अब ग्रामीणों को मृत्यु के भय से लड़ने का साहस देता था। थोड़ी देर के लिए वे अपनी पीड़ा और असहायता भूल जाते थे।

चरण 3: संजीवनी शक्ति का आशय स्पष्ट करना ढोलक सुनकर अधमरे और निराश लोगों की आँखों में भी आशा की चमक आ जाती थी। यह स्वर पूरे गाँव को एक साझा अनुभव में बाँधता था और अकेलेपन का बोझ कम करता था। रोग की भयावहता बनी रहती थी, फिर भी उसे सहने की मानसिक ताकत मिलती थी। इसी जीवन-विश्वास और संघर्ष-चेतना के कारण ढोलक की आवाज़ को मृत-गाँव में संजीवनी शक्ति भरने वाली कहा गया है।

चरण 4: निष्कर्ष महामारी से भयभीत गाँव में ढोलक की गूँज जीवन की उपस्थिति और संघर्ष का संदेश देती थी। वह ग्रामीणों का अकेलापन तथा निराशा कम करके उनमें आशा, साहस और विपत्ति सहने की शक्ति जगाती थी; यही उसकी संजीवनी शक्ति थी।

त्वरित सुझाव: गाँव की महामारी, रात का भय और ढोलक से मिलने वाला साहस जोड़कर उत्तर लिखें; संजीवनी का अर्थ मानसिक जीवन-शक्ति के रूप में स्पष्ट करें।

6(ख). निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

नमक की पुड़िया ले जाने को लेकर सफ़िया के मन में क्या द्वंद्व था ? 'नमक' कहानी के आधार पर लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रज़िया सज्जाद ज़हीर की कहानी 'नमक' में मानवीय स्नेह और वतन की स्मृति राजनीतिक सीमाओं से अधिक प्रबल हैं।
- सफ़िया का द्वंद्व नमक के मूल्य का नहीं, उसे ले जाने के तरीके का था; उसके लिए यह सिख बीबी की भावनाओं से जुड़ी अमानत थी।

चरण 1: नमक ले जाने की भावनात्मक जिम्मेदारी सिख बीबी लाहौर को अपना वतन मानती थीं। उन्होंने सफ़िया से लाहौरी नमक लाने को कहा था। इसलिए सफ़िया के लिए नमक की पुड़िया कोई साधारण खाने की वस्तु नहीं रही; उसमें बीबी की जन्मभूमि की याद और उसके प्रति प्रेम समाया था। सफ़िया उनकी इच्छा पूरी करके नमक भारत पहुँचाना चाहती थी।

चरण 2: कानून और आत्मसम्मान के बीच द्वंद्व सफ़िया को पता चला कि नमक भारत ले जाना कानूनन मना है। अब उसके सामने प्रश्न था कि नमक को कस्टम अधिकारियों से छिपाकर ले जाए या साफ़-साफ़ बताकर। छिपाने पर चोरी जैसा व्यवहार होता और पकड़े जाने का डर भी था। दूसरी ओर, वह प्रेम के इस उपहार को छिपाकर ले जाना उसकी गरिमा के विरुद्ध समझती थी। खुलकर बताने पर नमक जब्त हो सकता था और बीबी से किया वादा अधूरा रह सकता था। इसी कारण उसका मन बार-बार दोनों रास्तों के बीच झूलता रहा।

चरण 3: निष्कर्ष सफ़िया का द्वंद्व था कि नमक छिपाकर ले जाकर बीबी की इच्छा पूरी करे या ईमानदारी से अधिकारियों को बताकर उसे ले जाने का जोखिम उठाए। अंततः उसने भावनाओं के इस उपहार को चोरी-छिपे ले जाने के बजाय उसके बारे में बताने का निश्चय किया।

त्वरित सुझाव: उत्तर में नमक ले जाने की इच्छा के साथ छिपाने और घोषित करने के दो विकल्प तथा उनसे जुड़ा भावनात्मक संघर्ष स्पष्ट कीजिए।

6(ग). निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

जाति-प्रथा आधारित श्रम विभाजन को लेखक ने स्वाभाविक विभाजन क्यों नहीं माना है ? व्यक्ति को स्वयं पेशा चुनने योग्य बनाने के लिए क्या अपेक्षित है ? पाठ के आधार पर लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- डॉ. भीमराव आंबेडकर श्रम के उपयोगी विभाजन और जाति के आधार पर श्रमिकों के स्थायी विभाजन में अंतर करते हैं।
- स्वाभाविक व्यवसाय-चयन व्यक्ति की रुचि, क्षमता और प्रशिक्षण पर आधारित होता है; जन्म या वंश पर नहीं।

चरण 1: जाति पर आधारित विभाजन की अस्वाभाविकता जाति-प्रथा में व्यक्ति का पेशा उसकी अपनी योग्यता या पसंद देखकर तय नहीं होता। माता-पिता के सामाजिक स्तर और जन्म की जाति के आधार पर उसके लिए पहले से काम निर्धारित कर दिया जाता है। इस व्यवस्था में व्यक्ति को अपनी क्षमता विकसित करके मनचाहा व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता नहीं मिलती। इसलिए लेखक इसे स्वाभाविक श्रम-विभाजन नहीं मानते। यह श्रम के साथ श्रमिकों को भी ऊँच-नीच के स्थायी वर्गों में बाँट देता है।

चरण 2: स्वतंत्र पेशा-चयन के लिए आवश्यक अवसर व्यक्ति को स्वयं पेशा चुनने योग्य बनाने के लिए उसकी अंतर्निहित शक्तियों, स्वाभाविक रुचियों और क्षमताओं का विकास आवश्यक है। उसे शिक्षा, उचित प्रशिक्षण और विकास के अवसर मिलने चाहिए, ताकि वह अपनी योग्यता पहचानकर उसका उपयोग कर सके। सामाजिक व्यवस्था ऐसी हो जिसमें वंशानुगत पेशे का बंधन न हो और आवश्यकता पड़ने पर व्यवसाय बदलने की स्वतंत्रता भी मिले। तभी काम व्यक्ति की दक्षता और इच्छा के अनुकूल होगा तथा बदलती परिस्थितियों में उसे बेरोज़गारी का सामना करने के लिए विवश नहीं होना पड़ेगा।

चरण 3: निष्कर्ष जाति-आधारित श्रम-विभाजन जन्म पर टिका है, व्यक्ति की प्राकृतिक क्षमता पर नहीं; इसलिए वह अस्वाभाविक है। स्वतंत्र पेशा-चयन के लिए व्यक्ति की रुचियों और शक्तियों का विकास, शिक्षा-प्रशिक्षण के अवसर तथा व्यवसाय चुनने और बदलने की स्वतंत्रता अपेक्षित है।

त्वरित सुझाव: पहले जन्म-आधारित पेशे की बाध्यता समझाइए, फिर उसके समाधान के रूप में रुचि, क्षमता, प्रशिक्षण और चयन की स्वतंत्रता लिखिए।

6(घ). निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

डॉ. भीमराव आंबेडकर की दृष्टि में आदर्श समाज के तीन आधार कौन-से हैं ? तीनों को उल्लेख करते हुए समझाइए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- डॉ. भीमराव आंबेडकर के आदर्श समाज का आधार स्वतंत्रता, समता और भ्रातृत्व है। ये तीनों मूल्य व्यक्ति की गरिमा तथा समाज के लोकतांत्रिक संगठन से जुड़े हैं।
- आदर्श समाज में जन्म से निर्धारित ऊँच-नीच के स्थान पर सबको अपनी क्षमताओं के विकास और परस्पर संपर्क के अवसर मिलने चाहिए।

चरण 1: स्वतंत्रता का अर्थ स्पष्ट करें स्वतंत्रता का अर्थ केवल जीवित रहने, आने-जाने या संपत्ति रखने की छूट नहीं है। व्यक्ति को

अपनी योग्यता और रुचि के अनुसार व्यवसाय चुनने तथा अपनी शक्तियों का उपयोग करने की स्वतंत्रता भी मिलनी चाहिए। जाति के आधार पर पहले से पेशा निर्धारित करना इस स्वतंत्रता का निषेध है। इसलिए आदर्श समाज किसी व्यक्ति को जन्म के कारण किसी काम में बाँधकर नहीं रखता।

चरण 2: समता का आधार समझें सभी मनुष्यों की शारीरिक क्षमता, सामाजिक परिस्थितियाँ और व्यक्तिगत प्रयास एक जैसे नहीं होते; फिर भी सबके साथ समान मानवीय व्यवहार होना चाहिए। वंश और सामाजिक सुविधाओं से मिलने वाले लाभ को किसी की श्रेष्ठता का आधार नहीं मानना चाहिए। समाज को सबको विकास का समान अवसर देना चाहिए, ताकि जातिगत विशेषाधिकार और वंचना दूर हों।

चरण 3: भ्रातृत्व और सामाजिक संपर्क का महत्त्व बताएँ भ्रातृत्व का अर्थ है सबके प्रति भाईचारे, सम्मान और अपनत्व की भावना। आदर्श समाज के विभिन्न वर्गों में स्वतंत्र संपर्क और विचारों का आदान-प्रदान होना चाहिए। किसी एक भाग में होने वाले परिवर्तन का लाभ दूसरे भागों तक भी पहुँचना चाहिए। इसी सहभागिता से लोग एक-दूसरे के सुख-दुख को अपना समझते हैं और लोकतंत्र जीवन-व्यवहार बनता है।

चरण 4: निष्कर्ष आंबेडकर की दृष्टि में स्वतंत्रता व्यक्ति को अपना मार्ग चुनने देती है, समता सबको समान गरिमा और अवसर देती है तथा भ्रातृत्व समाज को आत्मीय संबंधों से जोड़ता है। इन तीनों का सम्मिलित विकास ही आदर्श समाज की स्थापना करता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में स्वतंत्रता, समता और भ्रातृत्व तीनों लिखें तथा प्रत्येक को क्रमशः व्यवसाय की स्वतंत्रता, समान अवसर और परस्पर सामाजिक संपर्क से जोड़कर समझाएँ।

7(i)(क). "सिंधु सभ्यता मूलतः खेतिहर और पशुपालक सभ्यता थी।" कैसे ? 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'अतीत में दबे पाँव' में सिंधु सभ्यता के जीवन का परिचय पुरातात्त्विक अवशेषों के आधार पर मिलता है। कृषि और पशुपालन उसके आर्थिक जीवन के प्रमुख आधार थे।
- खेतिहर और पशुपालक होने का प्रमाण फसलों, कृषि-संबंधी साधनों, अन्न के भंडारण तथा पालतू पशुओं के अवशेषों से मिलता है।

चरण 1: कृषि के प्रमाण प्रस्तुत करें सिंधु सभ्यता के लोग गेहूँ, जौ, कपास आदि की खेती करते थे। वहाँ मिले बीजों और खेती के औजारों से उनके कृषि-कौशल का पता चलता है। कपास की खेती और उससे वस्त्र बनाने की जानकारी भी उनके विकसित खेतिहर जीवन को दिखाती है। सिंधु नदी के क्षेत्र की उपजाऊ भूमि कृषि के लिए अनुकूल थी; इस प्रकार नगरों की समृद्धि के पीछे नियमित कृषि-उत्पादन का महत्त्व था।

चरण 2: अन्न-भंडारण से जीवन का आधार समझें मोहनजोदड़ो में बड़े अन्न-भंडार के अवशेष मिले हैं। अन्न का व्यवस्थित संग्रह बताता है कि खेती केवल तत्काल भोजन जुटाने तक सीमित नहीं थी; उपज को सुरक्षित रखने की व्यवस्था भी थी। विकसित नगर-जीवन, कारीगरी और व्यापार के साथ-साथ लोगों के भरण-पोषण का मूल आधार कृषि ही बना हुआ था।

चरण 3: पशुपालन के प्रमाण बताएँ वहाँ के लोग गाय, बैल, भैंस, भेड़ और बकरी जैसे पशु पालते थे। पशुओं से जुड़े अवशेष तथा मुहरों पर उनके चित्र इस जीवन का परिचय देते हैं। बैल खेती में सहायता करते थे और अन्य पालतू पशु भी लोगों के दैनिक जीवन तथा आजीविका से जुड़े थे। इसलिए कृषि और पशुपालन एक-दूसरे के पूरक व्यवसाय थे।

चरण 4: निष्कर्ष फसलों और कृषि-औजारों के प्रमाण, अन्न-भंडार तथा पालतू पशुओं से जुड़ी सामग्री स्पष्ट करते हैं कि सिंधु सभ्यता की समृद्धि का मूल आधार खेती और पशुपालन था। नगरीय विकास के बावजूद उसका आर्थिक जीवन इन्हीं से पोषित होता था।

त्वरित सुझाव: इस कथन को सिद्ध करते समय केवल सभ्यता की प्रशंसा न करें; फसलें, अन्न-भंडार और पालतू पशु जैसे ठोस प्रमाण देकर उन्हें कृषि तथा पशुपालन से जोड़ें।

अथवा

7(i)(ख). 'डायरी के पन्ने' पाठ में "ऐन फ्रैंक की निजी भावनात्मक उथल-पुथल का दस्तावेज़ भी है।" इस कथन की विवेचना कीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- डायरी में ऐतिहासिक परिस्थितियों के साथ लेखक की निजी अनुभूतियाँ, इच्छाएँ और मानसिक संघर्ष भी व्यक्त होते हैं।
- ऐन की किशोरावस्था, पारिवारिक संबंध और आत्मीय संवाद की आकांक्षा उसके भावनात्मक संसार को समझने के आधार हैं।

चरण 1: बाहरी संकट और भीतर का अकेलापन ऐन फ्रैंक की डायरी में नात्सी अत्याचारों से भयभीत एक यहूदी परिवार के गुप्त आवास का जीवन मिलता है। बाहर पकड़े जाने का डर है और भीतर सीमित जगह में लगातार साथ रहने की विवशता। किंतु ऐन केवल इन घटनाओं की सूचना नहीं देती; वह ऊब, घुटन, उदासी और अकेलेपन को भी व्यक्त करती है। किसी ऐसे आत्मीय की कमी, जिसके सामने वह मन खोल सके, उसे डायरी की ओर ले जाती है।

चरण 2: किशोर मन के संबंध और अंतर्द्वंद्व ऐन को लगता है कि बड़े उसकी भावनाओं को पूरी तरह नहीं समझते। माँ से मतभेद, स्वयं को समझे जाने की इच्छा तथा पीटर के प्रति बढ़ता आकर्षण उसके मन में कई तरह के प्रश्न जगाते हैं। वह निकटता चाहती है, पर अपने व्यवहार और भावनाओं की समीक्षा भी करती है। शरीर और मन में हो रहे परिवर्तनों के प्रति उसकी जिज्ञासा किशोरावस्था की स्वाभाविक बेचैनी को सामने लाती है।

चरण 3: आशा और आत्मनिर्माण की इच्छा भय और निराशा के बीच भी ऐन स्वतंत्र जीवन, प्रकृति के सान्निध्य और लेखिका बनने का सपना सँजोती है। वह अपनी कमजोरियों तथा इच्छाओं को छिपाने के बजाय ईमानदारी से पहचानती है। इस आत्मसंवाद में उसका संवेदनशील, जिज्ञासु और आशावान व्यक्तित्व उभरता है। इसी कारण पाठ युद्धकालीन त्रासदी के साथ एक किशोरी के भीतर चल रहे भावनात्मक संघर्ष का प्रमाण भी बन जाता है।

चरण 4: निष्कर्ष अतः यह डायरी ऐतिहासिक उत्पीड़न का विवरण देने के साथ ऐन के अकेलेपन, पारिवारिक तनाव, प्रेम, आत्मसंशय और भविष्य की आशाओं का अंतरंग दस्तावेज़ भी है।

त्वरित सुझाव: कथन की विवेचना करते समय बाहरी युद्धस्थिति के साथ ऐन के अकेलेपन, संबंधों और सपनों के ठोस उदाहरण जोड़िए।

7(ii)(क). 'अजायबघर' से आप क्या समझते हैं ? 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर मुअनजो-दड़ो के अजायबघर का विवरण लिखिए।

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अजायबघर या संग्रहालय वह स्थान है जहाँ ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और कलात्मक महत्त्व की वस्तुएँ सुरक्षित तथा प्रदर्शित की जाती हैं।
- पुरातात्त्विक वस्तुओं से किसी प्राचीन सभ्यता के जीवन, शिल्प और रुचियों का परिचय मिलता है।

चरण 1: अजायबघर का अर्थ स्पष्ट करना अजायबघर में पुरानी और दुर्लभ वस्तुओं को व्यवस्थित रूप से रखा जाता है ताकि लोग उन्हें देखकर अतीत को समझ सकें। उसका महत्त्व केवल अनोखी वस्तुएँ दिखाने में नहीं, बल्कि मनुष्य के इतिहास और सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखने में भी है।

चरण 2: मुअनजो-दड़ो के संग्रहालय का विवरण पाठ के अनुसार मुअनजो-दड़ो का अजायबघर छोटा है। वहाँ खुदाई में मिली काली पड़ गई गेहूँ की बालियाँ, ताँबे और काँसे के बर्तन, मुहरें, वाद्य, चाक पर बने विशाल मृद्भांड, चौपड़ की गोटियाँ, दीये, माप-तौल के पत्थर और खिलौने जैसी वस्तुएँ रखी हैं। ये वस्तुएँ वहाँ के लोगों के भोजन, घरेलू जीवन, व्यापार, मनोरंजन और विकसित शिल्पकौशल का परिचय देती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष इस प्रकार मुअनजो-दड़ो का छोटा अजायबघर उत्खनन से प्राप्त वस्तुओं द्वारा सिंधु सभ्यता की समृद्ध जीवन-पद्धति की झलक दिखाता है।

त्वरित सुझाव: पहले अजायबघर का अर्थ लिखिए, फिर पाठ की चार-पाँच वस्तुओं के उदाहरण देकर उनका सभ्यता से संबंध स्पष्ट कीजिए।

अथवा

7(ii)(ख). 'ऐन फ्रैंक की डायरी' में किन तथ्यों का वर्णन किया गया है ? संक्षेप में अपने शब्दों में लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ऐन फ्रैंक की डायरी व्यक्तिगत अनुभवों के माध्यम से नात्सी उत्पीड़न और युद्धकालीन जीवन का चित्र प्रस्तुत करती है।
- संक्षिप्त उत्तर में ऐतिहासिक परिस्थितियों और ऐन की निजी अनुभूतियों, दोनों का उल्लेख आवश्यक है।

चरण 1: युद्धकालीन जीवन के तथ्य डायरी में द्वितीय विश्वयुद्ध के समय यहूदियों पर किए गए अत्याचार, गिरफ्तारी का भय तथा ऐन के परिवार और साथियों का गुप्त आवास में छिपकर रहना वर्णित है। सीमित साधन, भोजन की कठिनाइयाँ, बाहर की गतिविधियों पर निर्भरता और अपनी उपस्थिति छिपाए रखने की सावधानियाँ उनके असुरक्षित जीवन को सामने लाती हैं।

चरण 2: व्यक्तिगत और पारिवारिक अनुभव ऐन ने साथ रहने वालों के व्यवहार, आपसी मतभेदों, माँ से अपने संबंध तथा पीटर के प्रति आत्मीयता का भी वर्णन किया है। किशोरावस्था की जिज्ञासाएँ, अकेलापन, मन की उलझनें और समझे जाने की चाह उसके आत्मसंवाद में उभरती हैं। भयावह परिस्थितियों के बीच स्वतंत्र जीवन और लेखिका बनने की उसकी आशा भी डायरी का महत्त्वपूर्ण पक्ष है।

चरण 3: निष्कर्ष ऐन की डायरी युद्ध, यहूदी उत्पीड़न और छिपे जीवन की कठिनाइयों के साथ एक किशोरी के संबंधों, भावनाओं तथा भविष्य के सपनों का सजीव विवरण देती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर को दो पक्षों में सोचिए: युद्ध और गुप्त आवास के तथ्य तथा ऐन के निजी संबंध, भावनाएँ और आकांक्षाएँ।